International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 31-35

पवित्र तीर्थ स्थल ब्रह्म मंदिर पुष्कर की स्थापत्य कलाः एक अध्ययन

मोहम्मद रमजान*

प्रस्तावना

स्थापत्य कला, भवन निर्माण एवं पाषाणों को तराश कर संरचनाओं का निर्माण का नाम है इसका विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ हुआ। कहने का तात्पर्य, स्थापत्य कला भवनों के विन्यास, रचना और परिवर्तनशील समय एवं तकनीक के अनुसार मानव की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने योग्य सभी प्रकार के स्थानों के निर्माण की कला है।

स्थापत्य कला मानव जीवन से अत्यधिक सम्बन्धित होने के कारण पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक काल में मानव के क्रिया कलापों का ये मूर्त रूप संरचना के रूप में बिम्बित हुआ, परिणामस्वरूप उन्होने अपने रहने एवं सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संरचनाओं का निर्माण किया। आज ये हमारे सांस्कृतिक धरोहर है। ये प्राचीन संरचनाएं आधुनिक समय में भी हमारे पूर्वजों के गौरव तथा प्रयासों को दर्शाती है।

राजस्थान के अजमेर शहर से 14 कि.मी. दूर उत्तर पश्चिम में अरावली पहाडियों की गोद में बसा पुष्कर नाम का छोटा सा नगर देश के प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। इसका संबंध भगवान ब्रह्मा से है।

यहां ब्रह्मा जी का अपनी पत्नी सावित्री के साथ विश्व का एकमात्र मंदिर बना है। पुराणों में इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है। यह कई प्राचीन ऋषियों की तपोभूमि भी रहा है। यहां विश्व का प्रसिद्ध पुष्कर मेला लगता है जिसमें देश–विदेश से लोग आते हैं।

पुष्कर की गणना पंच तीर्थों में भी की गई है। तीर्थराज पुष्कर को सब तीर्थों का गुरु कहा जाता है। अजमेर से नाग पर्वत पार करके पुष्कर पहुंचना होता है। इस पर्वत पर एक पंचकुंड है और अगस्त्य मुनि की गुफा भी बताई जाती है।

यह भी माना जाता है कि महाकवि कालिदास ने इसी स्थान को अपने महाकाव्य अभिज्ञान शाकुंतलम के रचनास्थल के रूप में चुना था। पुष्कर के उद्भव का वर्णन पद्म पुराण में मिलता है। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने यहां आकर यज्ञ किया था।

पुष्कर का उल्लेख रामायण में भी है। विश्वामित्र के यहां तप करने की बात कही गई है। अप्सरा मेनका यहां के पावन जल में स्नान के लिए आई थीं। सांची स्तूप दानलेखों में इसका वर्णन मिलता है।

पांडुलेन गुफा के लेख में जो ईस्वी सन 125 का माना जाता है, उषमदवत्त का नाम आता है। यह विख्यात राजा नहपाण का दामाद था और इसने पुष्कर आकर 3000 गायों एवं एक गांव का दान किया था।

महाभारत के वन पर्व के अनुसार योगीराज श्रीकृष्ण ने पुष्कर में दीर्घकाल तक तपस्या की थी। सुभद्रा के अपहरण के बाद अर्जुन ने पुष्कर में विश्राम किया था। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने भी अपने पिता दशरथ का श्राद्ध पुष्कर में किया था। यह भी कहा जाता है कि महात्मा गांधी की अस्थिया भी इसी झील में डाली गई थीं।

* शोधार्थी, विषय चित्रकला, गोविन्द गुरू जनजातीय, विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा, राजस्थान।

पुष्कर राजस्थान के अजमेर जिले में मौजूद एक खूबसूरत शहर है, जिसे 'गुलाब उद्यान' के रूप में भी काफी जाना जाता हैं। पुष्कर को संस्कृति और बुद्धि का शहर भी कहते हैं, जहां ब्रह्मा जी का एकमात्र मंदिर पुष्कर में ही स्थित है। राजस्थान का पुष्कर शहर भारत के सबसे पुराने शहरों में से माना जाता है और ये जगह पुष्कर ऊंट मेले के लिए भी पर्यटकों के बीच खासा प्रसिद्ध है, जोकि साल में नवंबर के महीने में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है।

पचास से अधिक स्नान घाटों से घिरी यह झील राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित है। किंवदंती है कि भगवान ब्रह्मा एक धार्मिक समारोह आयोजित करने के लिए जगह की तलाश कर रहे थे। उन्होंने मार्गदर्शन करने के लिए एक कमल गिराया। कमल उस स्थान पर गिरा जो अब पुष्कर झील है। यह हिंदुओं के लिए एक पवित्र जल निकाय है और इस जगह पुष्कर मेला भी आयोजित किया जाता है। मेले के दौरान अपने पाप धोने के लिए हजारों तीर्थयात्री इस पवित्र झील में स्नान करने के लिए भी यहां आते हैं। आसपास के क्षेत्र विदेशी वनस्पतियों और जीवों के घर हैं, जहां कई प्रवासी पक्षी कुछ खास मौसमों में जलाशय में आते हैं। खूबसूरत पहाड़ियों के बीच स्थित यह झील राजस्थान के मुख्य पर्यटक आकर्षणों में से एक है।

ब्रह्मा मंदिर को जगतपिता ब्रह्मा मंदिर भी कहा जाता है, जो पुष्कर झील के पास स्थित है। ये देश का एकलौता बचा हुआ ब्रह्मा मंदिर पुष्कर में घूमने के लिए दुर्लभ स्थानों में से एक है। मंदिर को चौदहवीं शताब्दी में संगमरमर से बनाया गया था, जहां की अनूठी वास्तुकला देखने लायक होती है। यह मंदिर चॉदी के सिक्को जडा हुआ है। पूजा स्थल के अंदर, गर्भगृह में ब्रह्मा के चित्र सुशोभित हैं। विवाहित पुरुषों को गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति नहीं है क्योंकि यह स्थान केवल तपस्वियों या संन्यासियों के लिए आरक्षित है। इस मंदिर में सूर्य भगवान की संगमरमर से बनी मूर्ति भी है। इस मंदिर में भगवान सूर्य को जुते पहने हुए दिखाया गया है। भगवान ब्रह्मा को समर्पित, सबसे महत्वपूर्ण त्योहार यहां अक्टूबर और नवंबर के महीनों के दौरान आयोजित किया जाता है।

पुष्कर में निवास का सबसे बड़ा शाही स्थान, मान महल पुष्कर में घूमने के स्थानों में से एक है। सरोवर झील के किनारे स्थित, यहां से महल का दृश्य बेहद ही खूबसूरत लगता है। महल को राजा मान सिंह–प्रथम के लिए बनाया गया था, जो इस स्थान पर एक रिट्रीट सेंटर के रूप में आए थे। मान महल में एक प्रभावशाली वास्तुकला है जिसमें पारंपरिक राजस्थानी स्थापत्य तत्व शामिल हैं। इमारत की डिजाइनिंग में आप मुगलो का भी स्पर्श देख सकते हैं। आपको बता दें, महल को सरोवर होटल भी कहा जाता है, क्योंकि यह एक विश्व स्तरीय प्रवास है जहां हर तरह के पर्यटक अंतर्राष्ट्रीय माहौल का आनंद ले सकते हैं। झील के किनारे आप बोटिंग का भी मजा लेने के लिए जा सकते हैं।

पुष्कर में पाए जाने वाले विशाल घाटों में से, वराह घाट एक खूबसूरत जगह है जो शाम की महिमा और झील के शानदार दृश्यों के लिए जाना जाता है। यहां हर रात आयोजित होने वाली आरती समारोह पर्यटकों के बीच बेहद प्रसिद्ध है। इस घाट पर आप शांति से बैठकर खाने का मजा ले सकते हैं या फिर सुकून से झील पर पड़ती सूर्यास्त की रोशनी को निहार सकते हैं। घाट के किनारे कई फूड स्टॉल और हस्तशिल्प और राजस्थानी कलाकृतियों की दुकाने हैं, जहां से आप खरीदारी कर सकते हैं।

रणजी मंदिर की एक अनूठी विशेषता यह है कि यह दक्षिण भारतीय स्थापत्य शैली को प्रदर्शित करता है, जो पुष्कर में आम नहीं है। लेकिन मंदिर की भव्यता अचूक है। यह लोकप्रिय पूजा स्थल भगवान विष्णु के अवतार भगवान रंगी को समर्पित है। यह मंदिर 1823 का है और इसे पुष्कर के नए मंदिरों में से एक माना जाता है। पवित्र संरचना में राजपूत और मुगल डिजाइनों की स्थापत्य शैली भी शामिल है जो इसे अद्वितीय बनाती है। विष्णु मंदिर होने के कारण आप महत्वपूर्ण अवसरों पर विष्णु भक्तों की एक बड़ी भीड़ देख सकते हैं

पुष्कर अपने दर्शनीय स्थलों की वजह से बेहद प्रसिद्ध है और उन स्थलों में एक और नाम आता है वराह मंदिर का, जो शहर के मध्य में स्थित है। पुष्कर गौरवशाली राजवंशों और धार्मिक मंदिरों की भूमि होने के कारण, वराह मंदिर प्रमुख हिंदू भगवान, भगवान विष्णु के अवतार वराह को समर्पित है, जो एक सूअर के रूप में अवतरित हुए थे। मंदिर एक गुंबद, सफेद दीवारों और स्तंभों से युक्त एक उल्लेखनीय वास्तुकला के साथ शानदार ढंग से बनाया गया है। इस मंदिर का निमार्ण राजा आनाजी ने भगवान विष्णु के तीसरे अवतार वराह को समर्पित कर बनाया था। अपनी धार्मिक पवित्रता के कारण, यह देश भर से बड़ी संख्या में हिंदू भक्तों को आकर्षित करता है।

पुष्कर ऊंट मेला, जिसे कार्तिक मेला भी कहा जाता है, देश के सबसे खूबसूरत ऊंट त्योहारों में से एक है। यह त्यौहार हर साल नवंबर के महीने में 8 दिनों तक आयोजित किया जाता है। यह मेला हर साल पवित्र कार्तिक पूर्णिमा के दौरान स्थानीय ऊंट और पशु व्यापारियों को व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित किया जाता है। मेले के मैदान में कई दुकानें स्थापित की जाती हैं, जिनमें राजस्थानी हस्तशिल्प, कला और संस्कृति की विशेषता मौजूद होती है। साथ ही, इस मेले की सबसे अच्छी बात यह है कि मेले के प्रत्येक दिन में मैजिकल शो, सपेरा, कठपुतली शो, ऊंट परेड, जिप्सी डांस और घूमर सहित गतिविधियां शामिल होती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राथमिक स्त्रोत

1. अभिलेखागारीय स्त्रोत (राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर एवं राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली)
2. राजस्थान स्टेट गजेटियर वॉल्यूम – 5, 1982
3. Heber's Journal Vol. -II
4. Archeological Survey Report, Vol. - XXIII, Page 46
5. राजपूताना गजेटियर वॉल्यूम– 1–ए
6. राजस्थान जिला गजेटियर, अजमेर
7. Gazetteer of Sirohi State (1908), E.D. Erskine
8. गजेटियर ऑफ अजमेर –मेरवाड़ा (अजमेर, 1904), सी.सी. वॉटसन
9. राजस्थान जिला गजेटियर्स, जयपुर (1987)
10. Archaeological Survey of India Annual Report 1912-13, Part -1
11. Archaeological Survey of India Annual Report 1916-17, Government printing India.
12. Memoirs of the archaeological Survey of India No. 39 1929-30
13. जिलेवार सांस्कृतिक सर्वेक्षण, अजमेर जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 1995

❖◆❖